13
लक्ष्मीनारायण रंगा
(जन्म : 1934 ई.)

जीवन परिचय -

लक्ष्मीनारायण रंगा का जन्म 4 फरवरी 1934 को बीकानेर में हुआ। आपने डूंगर कॉलेज बीकानेर से स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की एवं भाषा विभाग जयपुर में मुख्य अनुवादक के रुप में कार्यरत रहे। बाल्यकाल से ही आपका रुझान नाटकों की ओर था। अतः नाटक लेखन, निर्देशन एवं अभिनय में सक्रिय भागीदारी निभाई।

रंगा जी हिंदी एवं राजस्थानी दोनों भाषाओं में समान अधिकार से साहित्य सृजन करते रहे हैं। आपके नाटक एवं एकांकी मुख्यतः ऐतिहासिक, सामाजिक एवं समसामयिक विषयों को आधार बनाकर लिखे गये हैं। इनके द्वारा रचित नाटक एवं एकांकी अभिनय एवं रंगमंच की दृष्टि से बेहद सफल रहे हैं। इनको सन् 2006 में राजस्थानी भाषा में रचित 'पूर्णमिदं' (रंग नाटक) पर साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ।

रचनाएँ -

नाटक एवं एकांकी संग्रह – टूटती नालन्दाएँ, रक्तबीज, तोड़ दो ये जंजीरें, एक घर अपना
कहानी संग्रह – दहेज का दान, हम नहीं बचेंगे, हम नहीं छोड़ेंगे,
कविता संग्रह – हरिया सूवटिया (राजस्थानी भाषा में)
बाल कहानियाँ – टमरकटूं (राजस्थानी भाषा में)

पाठ परिचय -

इस एकांकी में राजस्थान में स्वतंत्रता आंदोलन के प्रेरणास्त्रोत वीरशिरोमणि सागरमल गोपा द्वारा मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए प्राण न्योछावर करने की यशोगाथा है। सागरमल गोपा ने जैसलमेर राज्य के स्वेच्छाचारी शासन, अत्याचारी एवं निरंकुश सामंतशाही के विरुद्ध क्रांति का बिगुल बजाया। इससे क्रोधित हो सत्ताधारी वर्ग ने उन्हें बंदी बना लिया। बंदीगृह में उन्हें अमानवीय यातनाएँ दी गईं। लेकिन आपने आततायी शासन के सामने झुककर माफ़ीनामा पर दस्तखत करने से मना कर दिया। अंतः में इन्हें 3 अप्रेल 1946 को जेल में ही जिंदा जला दिया गया। आपकी शहादत ने राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम में नये प्राण फूँक दिए।

तात्विक दृष्टि से 'अमर शहीद' एक सफल एकांकी है। इसकी संवाद योजना में ओजपूर्ण भाषा शैली का प्रयोग पाठकों का ध्यान आकृष्ट करती है।

अमर शहीद

पात्र परिचय –

सागरमल गोपा – 46 वर्षीय स्वतंत्रता सेनानी, धोती–कुर्ता पहिने, हाथ में हथकड़ियाँ, पाँवों में दोहरी बेड़ियाँ

गुमानसिंह रावलोत – पुलिस अधीक्षक

जेलर करणीदान – जैसलमेर जेल का इंचार्ज।

बीरबल मुनकासोहिल, अहमदकलर, सिपाही आदि।

(3 अप्रैल 1946, दोपहर का समय)

(पर्दा उठाने पर जेल की कोठरी का आंतरिक भाग दिखाई देता है। सामने की दीवार में लोहे का दरवाजा खुला है। रंगमंच के बीच सागरमल गोपा बैठा है। उसके हाथ पीछे करके उल्टी हथकड़ी लगाई हुई है तथा पाँवों में भारी बेड़ियाँ। बेड़ियों के कारण उनके पाँवों में घाव पड़ गए हैं तथा उनसे खून बह रहा हैं। सागरमल गोपा ने धोती कुर्ता पहन रखे हैं, जो मैले कुचैले हैं। बेंतों से बार–बार पीटने से कपड़े जगह–जगह से फटे हुए हैं तथा उन पर खून के दाग लगे हुए हैं। सागर के चेहरे पर गहरी वेदना के चिह्न हैं। वह हिलता है तो दर्द से हल्की चीख निकल जाती है। वह दाँत भींचकर दर्द को दबाने की कोशिश करता है। पर नीचे के अंगों में मिर्ची की लुगदी चढ़ाई होने के कारण उसके थोड़े हिलते ही तेज चीख बरबस निकल जाती है। पीछे के दरवाजे में गुमानसिंह रावलोत खूनी भेड़िये की–सी नजर और मुस्कान लिए खड़ा नजर आता है।)

सागर – (चीखकर) नहीं.... नहीं.... नहीं..... यह पीड़ा..... यह अपमान..... यह आग अब. .....नहीं सही जाती.....

गुमान – (हँसकर) नहीं सही जाती तो महारावल जवाहरसिंहजी से माफी माँग लो.....

सागर – माफी! किस बात की माफी? कौन से अपराध के लिए माफी?

गुमान – सागर, अगर एक अपराध हो तो बताऊँ? राजद्रोह करके तुमने तो जैसलमेर की नाक कटवा दी।

सागर – राष्ट्रप्रेम करके नाक ऊँची करवा दी गुमानसिंह.... सारे देश में, सारी दुनिया में.....

गुमान – लानत है तेरी इस नाक पर! महारावल की जगह यदि मैं होता तो राजद्रोह में तेरी बोटी–बोटी नुचवा देता।

सागर – पर क्यों?

गुमान – इसलिए कि तुमने अन्नदाता के साथ गद्दारी की। तुमने 'जैसलमेर राज्य का गुंडा शासन' और 'रघुनाथ सिंह का मुकदमा' किताबें लिखी। महारावल को डाकू, खूनी, हिंसक और आततायियों का रक्षक कहा। इस राज्य को जंगल का राज्य कहा।

सागर – अपने कलेजे पर हाथ रखकर सोच, गुमानसिंह! क्या मैंने यह गलत कहा है?

गुमान – बिल्कुल गलत! अरे नमक हराम! तेरी पीढ़ियों ने जिस भाटी महारावल का नमक खाया है, तूने उसी थाली में छेद किया। गद्दार।

सागर – (गुस्से से) गद्दार मैं नहीं, गद्दार तुम और तुम्हारे महारावल दोनों हो, जो अंग्रेजों की छत्रछाया पाने के लिए मातृभूमि के साथ गद्दारी कर रहे हो–जनता को डंडे और अंधे कानून से दबाते हो। मैंने जो भी किया जनता के हित में किया।

गुमान – (गुस्से से) झूठे! क्या तुमने राज्य की जनता को नहीं उकसाया? क्या तुम लोगों ने ताजियों का झगड़ा नहीं भड़काया ? क्या तुम लोगों ने दर्जी सत्याग्रह नहीं कराया? क्या तुमने हड़तालें और भूख हड़तालें नहीं कराई? क्या तुमने क्रांतिकारी कविताएँ नहीं लिखीं? क्या तुमने जैसलमेर के किले पर तिरंगा झंडा लहराने की घोषणा नहीं की? क्या तुम लोगों ने नहीं कहा कि महारावल को नजराना भेंट नहीं करेंगे? क्या तुम लोगों ने संकल्प नहीं किया कि महारावल के सामने सिर नहीं झुकाएँगे? बोल..... बोल..... तुम लोगों ने यह सब किया या नहीं

सागर – किया–किया–किया सौ बार किया और हजार बार करुँगा..... मेरे जीवन का ध्येय ही है जैसलमेर की प्रजा को जाग्रत कर सामंती अत्याचारों को नष्ट करना। इसके लिए मैं प्राणों की बाजी तक लगा देना चाहता हूँ।

गुमान – (गुस्से से) और तेरे जैसे पीवणे सँपोलिये को मैं पाँवों से कुचल देना चाहता हूँ.....

सागर – गुमानसिंह ! तुम्हारे 'डायर' और 'ओ डायर' मेरी आवाज दबा नहीं सकते! तुम्हारा महारावल और सामन्त–मंडल मेरी आवाज से हिल उठेगा। मेरी आवाज में वो आग है, जो तुम्हारी राक्षसी–सामंती व्यवस्था को श्मशान बना देगी। तुम्हारी मौत का पैगाम बन जाएगी। मेरे साँसों की एक फूँक से तुम्हारा जुर्म का राज्य ताश के महल की तरह ढह जाएगा.....

गुमान – (चीखकर) ओह, चुपकर कमीने! यह सामंती व्यवस्था तो श्मशान बनेगी या नहीं, मेरी मौत का पैगाम आएगा या नहीं पर तेरी मौत तेरे सिर पर अवश्य मँडरा रही है। ठहर, अभी बताता हूँ–(जोर से पुकारकर) बीरबल, मुनकासोहिल–अहमदकलर ! (बाहर से तीनों की आवाज)

तीनों – (एक साथ) हुक्म रावलोतजी !

गुमान – सिपाहियों से कह दो कि इस आजादी के कुत्ते को थप्पड़ें, लातें, घूँसे, लाठी और बूटों की ठोकरे मारें। मार–मार कर इसका कचूमर निकाल दें।

बीरबल – (बाहर से ही) चलो सिपाहियो! निकाल लो अपने हाथ–पाँवों के वट ! (सिपाही आते हैं। कोई थप्पड़ मारता है, कोई बूट की ठोकर। कोई पीठ पर घूँसा मारता है, कोई लाठी मारता है। सागर–'हाय–हाय' करता है–थोड़ी देर यह मारपीट चलती है। फिर वे सागरमल को जमीन पर गिरा देते हैं। उसके पाँवों पर सिपाही खड़े हो जाते हैं। वह जोर से चीखता है। गुमानसिंह व सिपाही जोर से हँसते हैं। सागरमल तड़पकर बेहोश हो जाता है।)

गुमान – फेंक दो इस जिंदा लाश को। (सिपाही बेहोश सागरमल को घसीटकर रंगमंच के एक तरफ डाल देते हैं–इसी समय जेलर दरवाजे में से आता है। वह सागर की ओर ध्यान से देखता है।)

गुमान – अभी मरा नहीं है जेलर साहब! अभी तो इसे तड़प–तड़प कर मरना है। वो सजा दूँगा कि यह.....

जेलर – (बीच में बात काटकर) वो तो ठीक है गुमानसिंहजी! पर सभी को एक ही लाठी से नहीं हाँका जा सकता। ये स्वतंत्रता के दीवाने सर कटा लेंगे, पर झुकाएँगे नहीं। इनसे तो नीति से काम लेना चाहिए ताकि साँप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे।

गुमान – (असमंजस में) आपकी बात समझा नहीं।

जेलर – कोई बात नहीं। समय आने पर मैं समझा दूँगा! अब आप जाइये। मुझे सागर को होश में लाकर जरुरी बात करनी है।

गुमान – (जाते–जाते) मेरी जरूरत पड़े तो बुला लें।

जेलर – जरूर और हाँ (गुमानसिंह जाते–जाते रुक जाता हैं) थोड़ा ठंडा पानी भिजवा दीजिये।

गुमान – (जाते हुए) ठीक।

(जेलर सागरमल की हथकड़ी खोलकर उसे सीधा करता है। उसकी नब्ज देखता है। एक सिपाही गिलास और लोटे में पानी लाता है। जेलर सागरमल के मुँह पर दो–तीन बार पानी के छींटे देता है। धीरे–धीरे

कराहता हुआ सागरमल होश में आता है। जेलर उसे सहारा देकर बैठाता है और पानी पिलाता है।)

जेलर – (सहानुभूति से) सागरमल.... सागर

सागर – (कराहते हुए) जी....

जेलर – सागर, अपने पर, अपनी इस जान पर रहम खा..... तेरी यह हालत मुझसे देखी नहीं जाती..... ओह, क्या दशा हो गई है तेरी..... ?

सागर – धन्यवाद जेलर साहब पर स्वतंत्रता के दीवानों को सहानुभूति की भीख नहीं चाहिए।

जेलर – तो तुम क्या चाहते हो?

सागर – (दुःख भरी मुस्कान से) हमें चाहिए स्वतंत्रता..... सिर्फ स्वतंत्रता.....

जेलर – (प्रसन्न होकर) वही तो मैं कहता हूँ..... तुम स्वतंत्र हो सकते हो..... मैं तुम्हें स्वतंत्र करा सकता हूँ.....

सागर – (बात समझकर) मुझे मेरी स्वतंत्रता नहीं, भारत माता की स्वतंत्रता चाहिए।

जेलर – तेरी भारत माता तो स्वतंत्र हो या नहीं? पर तेरी साँसों का सूर्य जरुर अस्त हो जाएगा।

सागर – (उठने का प्रयास करता है, जेलर सहारा देकर खड़ा करता है) इस स्वतंत्रता के लिए प्राणों के हजारों सूर्य भी अस्त करने पड़े तो मैं हर जीवन में ऐसा करने को तैयार हूँ।

जेलर – पर सागर जरा सोच, अगर वह स्वतंत्रता मिल भी गयी, तो तुझे क्या मिल जाएगा? तेरा घर, तेरा परिवार.....

सागर – (हल्की हँसी के साथ) स्वतंत्रता के दीवाने संसार से कुछ लेने की नहीं, संसार को कुछ देने की तमन्ना रखते हैं जेलर साहब! वे अपने जीवन की साँसों के मोतियों से अपना घर नहीं, संसार को सजाते हैं।

जेलर – वो तो ठीक है सागर, पर मान लो, तुमने जीवन भर संघर्ष किया और फिर भी स्वतंत्रता नहीं मिली तो?

सागर – तो क्या हो जाएगा? हम तो यह मानकर चलते है कि स्वतंत्रता का संग्राम एक लम्बा सफर है। हम तो बस, प्राणों की मशाल जलाकर उस पर चलना जानते हैं। कितना चल पाएँगे, कितना बढ़ पाएँगे कौन जानता है?

जेलर – और चलते–चलते जिंदगी के कदम थम गए तो?

सागर – तो यह मशाल, हम किसी और के हाथों में सौंपकर मौत की गोद में सिर रखकर आराम से सो जाएँगे.....

जेलर – पर सागर! जब तक जान है, तब तक जहान है। क्या तुझे विश्वास है कि इन तेज तूफानों में तुम्हारी यह मशाल जलती रह सकेगी?

सागर – वह मशाल ही क्या जेलर साहब, जो तूफ़ानों में बुझ जाए? फिर भी अगर यह मशाल बुझने लगी, तो हज़ारों दूसरी मशालें प्रज्वलित करके बुझेगी। हर मशाल को एक ना एक दिन बुझना ही पड़ता है, चाहे जल्दी या देर से। फिर बुझने से क्या डर?

जेलर – पर सागर! उस स्वतन्त्रता से क्या फायदा, जो मौत के बाद मिले।

सागर – (बीच में बात काटकर) स्वतन्त्रता–सेनानी आम का बाग लगाता है जेलर साहब! वह जानता है, इस आम का अमृत उसे नहीं मिलेगा। वह अपने प्राण बोकर, खून–पसीने से सींचकर, यह अमृत–फल आने वाली पीढ़ियों के लिए उगाता है। स्वतन्त्रता संग्राम भी इसी भावना से लड़ा जा रहा है। भगीरथ गंगा खुद के लिए नहीं लाया था। युगों–युगों तक लोग उस भागीरथी से अपने तन–मन की प्यास बुझाते रहेंगे।

जेलर – गंगा लाने पर भगीरथ का नाम तो अमर हो गया, पर तेरा नाम इस अँधेरी काल–कोठरी में घुट–घुट कर मिट जायेगा.....

सागर – नींव का पत्थर कब कहता है जेलर साहब कि मेरी कहानी बने। उस पर खड़ा भवन ही उसकी जीवन्त कहानी होता है। अँधेरे में गलकर भी वह अजर–अमर है, चाहे उसका स्वयं का अस्तित्व उजागर न हो। इसीलिए नींव के पत्थर का महत्व हर कीर्ति–स्तम्भ से बढ़कर होता है।

जेलर – फिर भी हर काम करने वाला नाम तो चाहता ही है।

सागर – (हल्की हँसी) जेलर साहब! बसन्त लाने के लिए झड़ने वाले पत्ते कब कहते हैं कि कोई उनके यशोगीत गाए। वे तो चुपचाप झड़ जाते हैं और चुपचाप धरती की गोद में खाद बनकर समा जाते हैं और उनके स्थान पर उग आते हैं नये–नये, हरे–हरे पत्ते।

जेलर – फिर भी सागर! मनुष्य का जीवन चौरासी लाख योनियों में भटकने के बाद भी मुश्किल से मिलता है – उसे यूँ नष्ट करना, बिना किसी फल की आशा के ?

सागर – यज्ञ में आहुति देने वाला यह नहीं देखता जेलर साहब कि उसकी आहुति से कौन–सी लपट उठती है? उठती भी है या नहीं? वह तो बस आहुति देना ही अपना धर्म समझता है।

जेलर – पर तुम्हारी एक आहुति से यज्ञ की कौनसी पूर्णाहुति हो जाएगी?

सागर – जेलर साहब ! जैसे एक बीज गलकर ही सैकड़ों बीज पैदा करता है, एक लौ जलकर ही, हजारों दीप जला सकती है, एक लहर उठकर ही हजारों

उठा सकती है, वैसे ही एक शहीद भी अपने प्राणों के बीज बोकर शहीदों की अमर फसल उगा सकता है। मेरे प्राणों की आहुति चाहे पूर्णाहुति न बने, पर यज्ञ को प्रज्वलित तो रखेगी ही! मेरे प्राणों का दीप.....

जेलर – पर सागर! तुम्हारे प्राणों का दीप बुझा दिया जाएगा और उसकी रोशनी की एक किरण तक को इस कोठरी से बाहर नहीं फैलने दिया जाएगा.....

सागर – पर आग बुझ कर भी वातावरण की साँसों में वह गर्मी भर जाती है जो कहीं लपट बनकर फिर जल सकती है।

जेलर – ये सब जुनून की बातें हैं। तुम यहाँ परकोटे में कैद हो। यहाँ तुम्हारी आवाज को कुचल दिया जाएगा.....उस दम तोड़ती आवाज को कोई सुन नहीं पाएगा। तुम्हारे सपनों की दुनिया इसी काल–कोठरी में दफन हो जाएगी।

सागर – (हँसकर) आवाज कभी मरती नहीं जेलर साहब! मेरी आवाज का यदि गला घोंटा गया, तो वह जनता की आवाज बन जाएगी और जनता की आवाज कभी दब नहीं सकती, कभी मर नहीं सकती। (सोचकर) फिर शहीदों की जिन्दगी तो लुप्त गंगा की तरह होती है जेलर साहब! जो कहीं भी, किसी भी धरातल को फोड़कर बह निकलती है। उसे कोई जंजीर, कोई जेल, कोई दीवार, कोई परकोटा बाँध नहीं सकता।

जेलर – यह सब पागलपन है सागर ! तुमने कभी सोचा, तुम कितने स्वार्थी हो? तुम्हारे इस जीवन पर सिर्फ तुम्हारा ही हक नहीं है, तुम्हारे परिवार का भी अधिकार है। जानते हो, तुम्हारे बूढ़े पिता तुम्हारे लिए तरस–तरस कर मर गए? दिन–रात गोपा–गोपा की रट लगाते हुए, तुम्हें पुकारते–पुकारते तुम्हारी बीमार बूढ़ी माँ के प्राण पखेरु न जाने कब उड़ जाएँ? तुम्हारे भाई कितने दुःखी हैं? सूनी गोद वाली तुम्हारी पत्नी दिन–रात कितनी रोती है? क्या तुम्हें इन सब पर दया नहीं आती?

सागर – जेलर साहब! (थोड़ा दुःखी होकर) मैं एक आँख से इन्हें देखता हूँ तो दूसरी आँख से देश की दुःखी जनता को देखता हूँ। एक कान से इनकी पुकारें सुनता हूँ। जेलर साहब! मातृभूमि, मेरी माँ की माँ है, देश मेरे पिता का पिता है। मेरे देशवासी मेरे परिजनों से बढ़कर हैं। यदि मेरे घर वालों के दुःख–आँसू भारत माता के होंठों पर सुख–स्वतन्त्रता की मुस्कान रचा सके, तो मैं अपने परिवार की हर कराह–हर आँसू सहने को तैयार हूँ।

जेलर – देखो, मेरी बात मानो, व्यर्थ प्राण गँवाने से कोई फायदा नहीं। महारावल जवाहरसिंह कोई पराये नहीं, अपने ही अन्नदाता हैं। उनको पिता समझकर माफी माँग लो।

सागर – (चिल्लाकर) नहीं, कभी नहीं! उस खूनी दरिन्दे से माफी? जिसने जैसलमेर की सारी जनता के भविष्य को अँधेरे से ढक रखा है, जिसने कानून और अदालत को काली कठपुतली बना रखा है। जो चोर, डाकू और खूनियों के बलबूते पर राज्य चला रहा है, उससे माफी? धत्त कभी नहीं!

जेलर – तो वे तुझे मार डालेंगे। उनका कानून, उनका दण्ड, तेरे इस घमंड को चूर–चूर कर देगा। तुम्हारे.....

सागर – कानून और दण्ड के काले हाथ फूल को डाली से नोंचकर मसल सकते हैं जेलर साहब, पर उसकी महक नष्ट नहीं कर सकते। महक तो हवाओं की धरोहर होती है, जो फैले बिना नहीं रहती। वे मेरे तन को दबा सकते हैं, मेरे मन को नहीं। मुझे मार सकते हैं, मेरी भावना को नहीं, मेरी आत्मा को नहीं।

जेलर – देख, मैं तुझे समझाता हूँ। तू मान जा। नहीं तो ये तेरी बोटी–बोटी नोच लेंगे–तुझे ये ऐसी यातनाएँ देंगे कि पत्थर का कलेजा भी दहल जाए।

सागर – (साहस से) ये दुःख और यातनाएँ स्वतन्त्रता की आग में घी सींचने का काम करेंगी, जेलर साहब! जितना इस तन को सताया जाएगा, उतना ही प्राणों की लौ और तेज होगी। स्वतन्त्रता का कमल शहीदों के रक्त–सरोवर में ही उगता, बढ़ता है। (रुककर साँस लेता है)

जेलर – अरे, पगले! ये तेरे पाँव तोड़ देंगे, तेरे हाथ तोड़ देंगे, तुम्हारी आँखें फोड़ देंगे, तुम्हारे प्राण ले लेंगे।

सागर – (हँसकर) मातृभूमि के दीवाने तन का जीवन नहीं, मन का जीवन जीते हैं। फिर मेरे पाँव टूटने पर यदि मेरे देश का एक कदम आगे बढ़े, मेरे हाथ टूटने पर यदि देश के हाथ थोड़े मजबूत होते हों, मेरी आँखें फूटने से यदि देश को नई नजर मिले, मेरे प्राण लेने से यदि देश को नया जीवन मिले, तो मैं इन्हें खोना अपना परम सौभाग्य मानूँगा। मेरा नाम सागर है जेलर साहब! मेरी गहराइयों को तोप और तलवार हिला नहीं सकतीं।

जेलर – अब तुझे कैसे समझाऊँ? मेरा तो यही कहना है.....

(बाहर से गुमानसिंह बोलता हुआ आता है। उसके हाथ में बेंत है। वह गुस्से में नजर आता है। साथ में बीरबल आदि भी हैं।)

गुमान – यह आपका कहना नहीं मानेगा जेलर साहब! मेरा कहना मानेगा। आपकी मीठी चाल से यह बस में नहीं आएगा। लातों के भूत बातों से नहीं मानते। आज मैं इसे वो मजा चखाऊँगा कि लोग सदियों तक याद रखेंगे। आपको महारावल साहब याद फरमा रहे हैं। (जेलर सागर की ओर देखता है और हल्का सा काँप कर बाहर चला जाता है।)

गुमान – (क्रोध से) हाँ तो सागर, बता तूने रेजीडेन्ट एलिंगटन को गुप्त पत्र कैसे भेजे? तूने जवाहरलाल नेहरु को, जयनारायण व्यास और हीरालाल शास्त्री व दीवान को पत्र क्यों लिखे? बोल, नहीं तो आज तेरा खून पी जाऊँगा। तूने मेरी और महारावल की बहुत निन्दा की है। बोल, नहीं तो तुझे कच्चा चबा जाऊँगा। (दाँत पीसता है)

सागर – सच्चाई कहने का हर इन्सान का हक है, गुमानसिंह। तुम्हारे काले कारनामों का पर्दाफाश.....

गुमान – (जोर से बेंत मारकर) काले कारनामों का पर्दाफाश.....और कर (दो–तीन बेंत मारता है।) लगता है तेरी मौत ही तुझे नागपुर से जैसलमेर खींच लाई है। लगता है तेरी मौत मेरे हाथों ही.....

सागर – मुझे मौत नहीं, मेरी जन्मभूमि का प्यार यहाँ खींच लाया है। मेरी मौत नहीं, लगता है सामन्तशाही की मौत मुझे यहाँ खींच लाई है। लगता है सामन्तशाही की अर्थी में मेरा कंधा लगेगा, लगता है महाराज और तुम दोनों.....

गुमान – (चीखकर) चुप रह बदतमीज, तेरी जुबान खींच लूँगा (जोर से पुकार कर)

बीरबल – अहमद इसे ले जाओ और "माचा चढ़ाओ" इसके मुँह, नाक, आँख और निचले अंगों में मिर्च भर दो। इसकी ऐसी हालत कर दो कि यह मौत के लिए भीख माँगे और मौत भी इसे भीख न दे। खींच डालो इसकी खाल। (वे लोग आकर जबरदस्ती सागरमल को घसीट कर बाहर ले जाते हैं। गुमानसिंह कोठरी में कुछ सोचता हुआ चक्कर लगाता है। लगता है कोई भयंकर निर्णय लेने वाला है। थोड़ी देर में सागरमल की दिल दहला देने वाली चीखें सुनाई देती हैं और उन लोगों का अट्टहास। गुमानसिंह भी सागरमल का चीखना सुनकर मुस्कराता है)

सागर – (पीछे से आवाज) नहीं..... नहीं, अरे मेरी टाँग चिर रही है। अरे! मेरे प्राण निकल रहे हैं – अरे..... अरे..... अरे..... मेरी आँखों में मिर्च डाल दी। आह अरे..... अरे..... मुझे छोड़ दो। अरे राक्षसों बस करो..... अरे..... अरे ये–ये मिर्च मेरे..... मेरे..... मत चढ़ाओ – अरे मेरे रोम–रोम में आग लग गई। छोड़ दो मुझे (थोड़ी देर आवाजें आती हैं। फिर वे लोग हँसते हुए अर्ध बेहोश–कराहते हुए सागरमल को लाते हैं। उससे चला नहीं जाता। लड़खड़ाता हुआ चलता है। उसके मुँह–आँख–नाक में मिर्च दबी नजर आ रही है। उसके निचले अंगों में मिर्च की लुगदी चढ़ाई हुई है। उसकी धोती खून से तरबतर है। लाकर वे उसे छोड़ देते हैं। वह धम्म से गिर जाता है। वे सभी जोर से हँसते हैं। सागरमल दर्द से तड़पता है। उसके मुँह से चीख निकलती है।)

गुमान – (हँसता हुआ जेब से कागज निकालकर) सागर! अपनी जान बचाना चाहता है तो मेरा कहना मान। इस माफीनामे पर दस्तखत कर दे।

सागर – (चीखकर) मेरे मौत के पैगाम पर दस्तखत करा ले गुमानसिंह, पर माफीनामे पर जीते जी दस्तख़त नहीं करुँगा। तुम लोगों ने पहले भी नारकीय यातनाएँ देकर मुझसे गफलत में दस्तखत करा लिए और मुझे नाहक बदनाम किया। अब मैं हाथ कटवा सकता हूँ पर किसी कागज पर दस्तखत नहीं करुँगा।

गुमान – तू क्या नहीं करेगा। तेरी छाया करेगी..... तूने गुमानसिंह का गुस्सा नहीं देखा? देख या तो माफीनामे पर दस्तखत कर दे.....

सागर – (बीच में बात काटकर) ताकि माफीनामा दिखाकर तुम मुझे जनता की नजरों में गिरा सको। दस्तखत करके जनता और सरकार को बता सको कि मुझ पर कोई अत्याचार नहीं किया जा रहा..... गुमानसिंह! तुम्हारी यह साजिश सफल नहीं होगी.....

गुमान – (व्यंग्य में हँसकर) गुमान का हर मोहरा ठीक जगह पर बैठता है, सागरमल! अगर..... तूने इन कागजों पर दस्तखत नहीं किए तो, तुझे मिट्टी का तेल छिड़क कर जिन्दा जला दूँगा और.....

सागर – और उस आग में तुम्हारा साम्राज्य जल जाएगा – जनता तुम लोगों को जीने नहीं देगी। इससे वो क्रान्ति होगी कि तुम्हारे जुल्म के शासन की नींवें तक हिल जाएँगी।

गुमान – गुमानसिंह ने कच्ची गोलियाँ खेलना नहीं सीखा है सागर! तुमने जगह–जगह पत्रों में लिखा है कि इस अत्याचार को नहीं सह सकता..... इससे तो आत्महत्या ही करना अच्छा..... (हँसता हुआ खूनी भेड़िये–सी नजर टिकाकर) समझे कि नहीं?

सागर – समझ गया। तुम मेरी हत्या पर आत्महत्या का कफन ओढ़ाने की कोशिश करोगे, पर भारत की जनता तुम्हारी इस चाल को मात दे देगी।

गुमान – नहीं, कभी नहीं। तेरे परदादे ने भी आत्महत्या की थी। यह तो तुम्हारा पुश्तैनी रोग है।

सागर – (गुस्से से चीखकर) झूठे..... नीच..... राक्षस..... तू..... तू..... इतना गिरा हुआ है।

गुमान – (गुस्से से) मुझे नीच कहता है।

सागर – हाँ..... हाँ..... नीच, हजार बार नीच।

गुमान – (गुस्से से) बीरबल मिट्टी के तेल का कनस्तर ला। इसे आज मजा चखाकर ही रहूँगा।

(बीरबल चुप खड़ा सोच रहा है।)

(चीखकर) मैं कहता हूँ, ला (बीरबल जाकर चुपचाप कनस्तर लाता है। गुमानसिंह कनस्तर लेकर सागर की तरफ बढ़ता हुआ।)

सागर – हाँ, हाँ..... कहूँगा.....

गुमान – (गुस्से से) कहेगा ?

सागर – हाँ कहूँगा।

(गुमानसिंह आग बबूला हो जाता है।)

गुमान – तो ले – (तेल सागरमल पर छिड़कता है।) अब भी सोच ले, वरना माचिस जलाता हूँ।

सागर – जला ले

गुमान – जला लूँ ?

सागर – हाँ, हाँ जला ले।

गुमान – (माचिस निकाल कर जलाता हुआ) यह जलाई और अब–अब तू देखते ही देखते राख हो जाएगा। बोल! माफीनामे पर दस्तखत करता है कि नहीं?

सागर – (साहसपूर्वक) नहीं करुँगा, जल जाना मंजूर है, पर माफी नहीं माँगूँगा।

गुमान – (गुस्से से) नहीं माँगेगा? आखिरी बार पूछ रहा हूँ।

सागर – नहीं माँगूँगा, राक्षस।

गुमान – (गुस्से से) राक्षस! तो ले! (माचिस लगा देता है। सागर के कपड़ों में आग लगती है। वह बुझाने का प्रयास करता है। गुमानसिंह और उसके साथी हँसते हैं। धीरे–धीरे आग तेज होती है।)

{इस दृश्य को रंगमंच के पीछे आग का प्रभाव पैदा करके भी दिखाया जा सकता है सिर्फ आवाजें आती रहें। अन्त में जले हुए सागर को रंगमंच पर लाया जा सकता है।}

अब भी माफी माँगे तो आग बुझ सकती है, बोल–

सागर – अगर हो सके तो थोड़ा तेल और छिड़क दे गुमानसिंह ताकि तेरे और मेरे दोनों के मन के अरमान पूरे हो जाएँ।

गुमान – (हँसकर) इसकी आखिरी इच्छा भी पूरी कर दो। (तेल छिड़कता है – आग तेज होती है – सागर जलने लगता है। आग तीव्र होती है तो चीख पड़ता है।)

सागर – भारत माता की जय, भारत माता की जय।

गुमान – (हँसकर) अरे! इसकी आवाजें दूसरों को सुनाई देंगी। इसके साथ–साथ बोलो "महारावल की जय" ताकि इसकी आवाज दब जाय। (सागर ज्यों ही भारत माता की जय बोलता है, वे तीनों साथ–साथ महारावल की जय बोलते हैं। उससे सागर की आवाज दब जाती है और सिर्फ सागरमल की "जय" सुनाई देती है मानो सागरमल भी महारावल की जय बोल रहा है।)

सागर – भारत माता की जय (जलने के कारण तड़पता है) भारत माता की जय (वे तीनों उसके चारों तरफ हँसते हुए चक्कर लगाते हैं तथा महारावल की जय के नारे लगाते हैं। सागर थोड़ी देर तड़पकर भारत माता की जय, भारत माता की जय बोलता हुआ धरती पर गिर जाता है। गुमानसिंह और उसके साथियों के अट्टहास के साथ पर्दा गिरता है।)

कठिन शब्दार्थ

आततायी	–	अत्याचारी।
नजराना	–	कर, उपहार, भेंट।
पीवणा	–	साँप की एक प्रजाति।
पैगाम	–	संदेश।
जुल्म	–	अन्याय, अत्याचार।
कचूमर	–	कुचलना।
नब्ज	–	नाड़ी, नस।
तमन्ना	–	इच्छा, कामना।
आहुति	–	हवन में डालने की सामग्री, यज्ञ।
प्रज्वलित	–	जलता हुआ, चमकता हुआ।
अर्थी	–	शव यात्रा।
नारकीय	–	नरक जैसी, नरक के समान।
गफलत	–	भूल, असावधानी।
नाहक	–	व्यर्थ में।
साजिश	–	षड्यन्त्र।
पुश्तैनी	–	पीढ़ियों से चला आता हुआ।
अरमान	–	इच्छा।
अट्टहास	–	बहुत जोर की हँसी।
माचा चढ़ाना	–	पुलिस द्वारा दी जाने वाले अमानवीय यातनाएँ, पुलिस का थर्ड डिग्री ट्रीटमेन्ट।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. सागरमल गोपा ने किस स्वेच्छाचारी राज्य के खिलाफ विद्रोह किया था?
   (क) बीकानेर (ख) नागपुर (ग) जैसलमेर (घ) जोधपुर
2. सागरमल गोपा ने किन स्वतंत्रता सेनानियों को पत्र लिखे थे?
   (क) जवाहरलाल नेहरू (ख) जयनारायण व्यास
   (ग) हीरालाल शास्त्री (घ) उपर्युक्त तीनों को

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

3. 'अमर शहीद' एकांकी का मुख्य पात्र कौन है?
4. जेलर का क्या नाम है?
5. पुलिस अधीक्षक का क्या नाम है?
6. सागरमल गोपा द्वारा रचित पुस्तकें कौन–कौन–सी हैं?
7. "हमें चाहिए स्वतंत्रता.....सिर्फ स्वतंत्रता" यह कथन किसने एवं किसको कहा?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

8. सागरमल गोपा को जेल में दी गई यातनाओं का वर्णन कीजिए।
9. "मातृभूमि के दीवाने तन का जीवन नहीं मन का जीवन जीते हैं" – पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

निबंधात्मक –

10. अमर शहीद एकांकी के आधार पर सागरमल गोपा का चरित्र चित्रण कीजिए।
11. ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए –
    (क) "आवाज कभी मरती नहीं.....बाँध नहीं सकता।"
    (ख) "स्वतंत्रता सेनानी आम का बाग.....प्यास बुझाते रहेंगे।"